



INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

REET

(मुख्य परीक्षा हेतु)

Level - 1



ॐ सरस्वती मया दृष्ट्वा, वीणा पुस्तक धारणीम।
हंस वाहिनी समायुक्ता मां विद्या दान करोतु मे ॐ॥

भाग - 2

राजस्थान का GK + शैक्षिक परिदृश्य + विज्ञान + सामाजिक अध्ययन + शिक्षण विधियाँ

प्रस्तावना

प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स “राजस्थान 3rd ग्रेड (REET मुख्य परीक्षा लेवल - 1 हेतु) को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर (RSMSSB) द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा “राजस्थान 3rd ग्रेड (REET मुख्य परीक्षा लेवल - 1)” की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे।

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

प्रकाशक:

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : <http://www.infusionnotes.com>

WhatsApp करें - <https://wa.link/r46kn5>

Online Order करें - <https://shorturl.at/gilw7>

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम

क्र.स.	अध्याय	पेज
	<u>राजस्थान का सामान्य ज्ञान</u>	
1	राजस्थान के प्रतीक चिह्न	1
2	राज्य सरकार की प्रमुख कल्याणकारी योजनाएँ	4
3.	राजस्थान के अनुसंधान केंद्र	16
4.	राजस्थान के प्रमुख धार्मिक स्थल	20
5.	राजस्थान के प्रमुख खिलाड़ी	22
6.	राजस्थान के प्रसिद्ध नगर एवं स्थल इत्यादि	23
7.	राजस्थान के प्रमुख उद्योग	23
8.	राज्य की राजनीतिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था (परिचय)	26
	<u>शैक्षिक परिदृश्य</u>	
1.	शिक्षण अधिगम के नवाचार	73
2.	राजस्थान व केंद्र सरकार की विद्यार्थी कल्याणकारी योजनाएं व पुरस्कार	78
3.	विद्यालय प्रबंधन एवं संबंधित समितियाँ	82
4.	भारत की नई शिक्षा नीति 2020	87
5.	निः शुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम - निः शुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम-2009 प्रावधान एवं क्रियान्वित - राजस्थान निः शुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिनियम नियम 2011 - राजस्थान के निजी विद्यालयों में निशुल्क प्रवेश	89
	<u>सामान्य विज्ञान</u>	
1.	अम्ल, क्षार और लवण	97

2.	तत्त्व , यौगिक एवं मिश्रण	99
3.	भौतिक एवं रासायनिक परिवर्तन	111
4.	गति एवं बल गति के नियम एवं गुरुत्वाकर्षण	113
5.	प्रकाश	116
6.	कोशिका संरचना एवं प्रकार्य	121
7.	जीवों में श्वसन तंत्र एवं परिवहन	126
8.	जंतुओं में जनन	127
<u>शिक्षण विधियाँ</u>		
1.	विज्ञान की शिक्षण विधियाँ	133
2.	विज्ञान शिक्षण के उपागम	140
3.	विज्ञान शिक्षण सहायक सामग्री एवं उपयोग	143
4.	विज्ञान शिक्षण की मूल्यांकन विधियाँ	145
5.	निदानात्मक एवं उपचारात्मक शिक्षण	150
<u>सामाजिक अध्ययन</u>		
1.	राजस्थान का सामान्य परिचय	152
2.	मुगल साम्राज्य	168
3.	पृथ्वी के प्रमुख स्थलरूप	176
4.	भारत प्राकृतिक वनस्पति वन्य जीव व संरक्षण	181
5.	राजस्थान में कृषि	190
<u>राजस्थान की अर्थव्यवस्था</u>		
1.	राजस्थान की खाद्य व व्यावसायिक फसलें, कृषि आधारित उद्योग	196
2.	अर्थव्यवस्था का वृहत् परिदृश्य	200

3.	प्रमुख बहुदेशीय परियोजना	203
4.	राजस्थान में औद्योगिक विकास	206
5.	गरीबी एवं बेरोजगारी	214
6.	भारतीय संविधान	219
7.	प्रमुख समाधि स्थल	259
8.	राजस्थान में लोक प्रशासन	261
<u>सामाजिक अध्ययन की शिक्षण विधियाँ</u>		
1.	सामाजिक अध्ययन की संकल्पना एवं प्रकृति	270
2.	शिक्षण अधिगम सामग्री एवं सहायक सामग्री	279
3.	सामाजिक अध्ययन में अध्यापन संबंधी समस्याएँ	281
4.	प्रायोजना कार्य	281
5.	सामाजिक अध्ययन में मूल्यांकन	283
6.	नैदानिक एवं उपचारात्मक	287

राजस्थान का सामान्य ज्ञान

अध्याय - 1

राजस्थान के प्रतीक चिह्न

1. राजस्थान राज्य पशु :- चिकारा (वन्य जीव श्रेणी)

- चिकारे को राज्य पशु का दर्जा - 22 मई, 1981
- चिकारे का वैज्ञानिक नाम - गजेला - गजेला
- चिकारा एंटीलोप प्रजाति का जीव है।
- राज्य में सर्वाधिक चिकारे जोधपुर में देखे जा सकते हैं।
- चिकारे को छोटा हिरण के उपनाम से भी जाना जाता है।
- चिकारों के लिए नाहरगढ़ अभयारण्य (जयपुर) प्रसिद्ध है।
- "चिकारा" नाम से राजस्थान में एक तत् वाद्य यंत्र भी है।
- चिकारा श्रीगंगानगर जिले का शुभंकर है।

2. राजस्थान राज्य पशु : ऊँट (CAMEL) (पशुधन श्रेणी)

- 30 जून, 2014 को बीकानेर में हुई कैबिनेट बैठक में ऊँट को राजकीय पशु घोषित किया गया
- ऊँट को राज्य पशु का दर्जा - 19 सितम्बर 2014
- ऊँट वध रोक अधिनियम - दिसम्बर 2014
- ऊँट का वैज्ञानिक नाम "कैमेलस डोमेस्टीकस" है।
- ऊँट को स्थानीय भाषा में रेगिस्तान का जहाज या मरुस्थल का जहाज (कर्नल जेम्स टॉड ने कहा) के नाम से जाना जाता है।
- 20 वी पशुगणना 2019 के अनुसार राजस्थान ऊँट के मामले में 2012 के 3.26 मिलियन की तुलना में 2019 में 2.13 मिलियन पशुओं के साथ पहले स्थान पर है। ऊँटों की संख्या में 34.64% की कमी हुई है।
- ऊँटों की संख्या की दृष्टि से राजस्थान का भारत में एकाधिकार है
- राजस्थान की कुल पशु सम्पदा ऊँट सम्पदा का प्रतिशत 0.56 प्रतिशत है।
- राज्य में जैसलमेर सर्वाधिक ऊँटों वाला जिला है। प्रतापगढ़ सबसे कम ऊँटों वाला जिला है।
- ऊँट अनुसंधान केन्द्र जोहड़बीड (बीकानेर) में स्थित है। ऊँट प्रजनन का कार्य भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा संचालित किया जा रहा है।
- कैमल मिल्क डेयरी बीकानेर में स्थित है।
- सर्वोच्च न्यायालय ने एक निर्णय में अक्टूबर 2000 में ऊँटनी के दूध को मानव जीवन के लिए सर्वश्रेष्ठ बताया। ऊँटनी के दूध में कैल्शियम मुक्त अवस्था में पाए जाने के कारण इसके दूध का दही नहीं जमता है।
- ऊँटनी का दूध मधुमेह (डायबिटीज) की रामबाण औषधि के साथ-साथ यकृत व प्लीहा रोग में भी उपयोगी है।

- भारतीय सेना के नाँजवान थार मरुस्थल में नाचना ऊँट का उपयोग करते हैं।
- जैसलमेर के नाचना का ऊँट सुंदरता की दृष्टि से प्रसिद्ध है।
- गोमठ-फलोंदी का ऊँट सवारी की दृष्टि से प्रसिद्ध है।
- बीकानेरी ऊँट सबसे भारी नस्ल का ऊँट है। इसलिए बीकानेरी ऊँट बोझा ढोने की दृष्टि से प्रसिद्ध है। राज्य में लगभग 50% इसी नस्ल के ऊँट पाले जाते हैं।
- ऊँटों के देवता के रूप में पाबूजी को पूजा जाता है। ऊँटों के बीमार होने पर रात्रिकाल में पाबूजी की फड़ का वाचन किया जाता है। राजस्थान में ऊँटों को लाने का श्रेय भी पाबूजी को है।
- ऊँटों के गले का आभूषण गोरबंद कहलाता है
- ऊँटों में पाया जाने वाला रोग सर्रा रोग है। प्रदेश में ऊँटों की संख्या में गिरावट का मुख्य कारण सर्रा रोग है। इस रोग पर नियंत्रण के उद्देश्य से वर्ष 2010-11 में ऊँटों में सर्रा रोग नियंत्रण योजना प्रारम्भ की गई।
- ऊँटों का पालन-पोषण करने वाली जाति राईका अथवा रेबारी है।
- ऊँटों की चमड़ी पर की जाने वाली कला उस्ता कला कहलाती है।
- उस्ता कला को मुनवती या मुनावती कला के नाम से भी जाना जाता है उस्ता कला मूलतः लाहौर की है।
- उस्ता कला को राजस्थान में बीकानेर के शासक अनूपसिंह के द्वारा लाया गया।
- अनूपसिंह का काल उस्ता कला का स्वर्णकाल कहलाता है। उस्ता कला के कलाकार उस्ताद कहलाते हैं।
- उस्ताद मुख्यतः बीकानेर और उसके आस-पास के क्षेत्रों के रहने वाले हैं। उस्ता कला का प्रसिद्ध कलाकार हिस्सामुद्दीन उस्ता को माना जाता है, जो कि बीकानेर का मूल निवासी थे।
- उस्ता कला का वर्तमान में प्रसिद्ध कलाकार मोहम्मद हनीफ उस्ता है उस्ता कला के एक अन्य कलाकार इलाही बख्स ने महाराजा गंगासिंह का उस्ता कला में चित्र बनाया, जो कि यू.एन.ओ. के कार्यालय में रखा हुआ है।
- महाराजा गंगासिंह ने चीन में ऊँटों की एक सेना भेजी जिसे गंगा रिसाला के नाम से जाना जाता है।
- पानी को ठण्डा रखने के लिए ऊँटों की खाल से बने बर्तन को कॉपी के नाम से जाना जाता है।
- सर्दी से बचने के लिए ऊँटों के बालों से बने वस्त्र को बाखला के नाम से जाना जाता है।
- ऊँट पर कसी जाने वाली काठी को कूंची या पिलाण के नाम से जाना जाता है। ऊँटों की नाक में पहनाई जाने वाली लकड़ी की कील गिरबाण कहलाती है।
- ऊँट की पीठ पर कुबड़ होता है। कुबड़ में एकत्रित वसा इसकी ऊर्जा का स्रोत है
- ऊँट व ऊँट पालकों के लिए वर्ष 2008-09 में भारतीय जीवन बीमा निगम तथा जनरल इंश्योरेंस कम्पनी के



सहयोग से “ऊँट एवं ऊँट पालक बीमा योजना” लागू की गई

- ऊँट का पहनावा - पीठ पर काठी, गर्दन पर गोरबन्द, टाँगों पर मोडिया, मुख पर मोरखा, पूँछ पर पर्चनी, गद्दी मेलखुरी
- ऊँटों की प्रमुख नस्लें - बीकानेरी, जैसलमेर, मारवाड़ी, अलवरी, सिंधी, कच्छी, केसपाल, गुराह

3. राजस्थान राज्य पक्षी : गोडावण

- गोडावण को राज्य पक्षी का दर्जा - 21 मई, 1981
- गोडावण का वैज्ञानिक नाम - *क्रायोटिस नाइग्रीसेप्स*
- गोडावण को अंग्रेजी में **ग्रेट इंडियन बस्टर्ड बर्ड** कहा जाता है।
- गोडावण को स्थानीय भाषा में **सोहन चिड़िया या शर्मीला पक्षी** कहा जाता है।
- इसे हाड़ौती क्षेत्र (सोरसेन) में “मालमोर्डी” कहा जाता है।
- गोडावण के अन्य उपनाम-सारंग, हुकना, तुकदर, बड़ा तिलोर व गुधनमेर हैं।
- राजस्थान में गोडावण सर्वाधिक तीन क्षेत्रों में पाया जाता है -

1. सोरसेन (बारां)

2. सोंकलिया (अजमेर)

3. मरुघान (जैसलमेर, बाड़मेर)

- गोडावण के प्रजनन हेतु **जोधपुर जंतुआलय** प्रसिद्ध है।
- गोडावण का प्रजनन काल अक्टूबर, नवम्बर का महिना माना जाता है।
- गोडावण मूलतः **अफ्रीका का पक्षी है।**
- इसका ऊपरी भाग नीला दिखाई देता है।
- गोडावण शतुरमुर्ग की तरह दिखाई देता है।
- प्रिय भोजन - मूंगफली व तारामीरा
- गोडावण राजस्थान के अलावा गुजरात में भी देखा जा सकता है।
- 2011 में की **IUCN (International Union for Conservation of Nature)** की रेड डाटा लिस्ट में इसे **Critically Endangered (संकटग्रस्त प्रजाति)** प्रजाति माना गया है गोडावण पक्षी विलुप्ति की कगार पर है
- गोडावण के संरक्षण हेतु राज्य सरकार ने विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून 2013 को राष्ट्रीय मरु उद्यान, जैसलमेर में **प्रोजेक्ट ग्रेट इंडियन बस्टर्ड** प्रारम्भ किया।
- 1980 में **जयपुर में गोडावण पर पहला अंतराष्ट्रीय सम्मलेन आयोजित किया गया।**
- गोडावण जैसलमेर का शुभंकर है।

4. राजस्थान राज्य पुष्प : रोहिड़ा

- रोहिड़े को राज्य पुष्प का दर्जा - 1983
- रोहिड़े का वैज्ञानिक नाम - *टिकोमेलान्ड्रुला*
- रोहिड़े के पुष्प मार्च, अप्रैल में खिलते हैं। इसके पुष्प का रंग गहरा केसरिया हिरमीच पीला होता है।

- इसको **राजस्थान का सागवान तथा मरुशोभा** कहा जाता है।
- जोधपुर में रोहिड़े के पुष्प को **मारवाड़ टीक** कहा जाता है।
- रोहिड़े को जरविल नामक रेगिस्तानी चूहा नुकसान पहुंचा रहा है।
- रोहिड़ा पश्चिमी क्षेत्र में सर्वाधिक देखने को मिलता है।

5. राजस्थान राज्य वृक्ष : खेजड़ी

- खेजड़ी राज्य वृक्ष का दर्जा - 31 अक्टूबर, 1983
- 5 जून 1988 को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर खेजड़ी वृक्ष पर **60 पैसे का डाक टिकट** जारी किया गया।
- खेजड़ी का वैज्ञानिक नाम :- *प्रोसेपिस सिनरेरिया*
- खेजड़ी को **राजस्थान का कल्प वृक्ष, थार का कल्प वृक्ष, रेगिस्तान का गौरव** आदि नामों से जाना जाता है।
- खेजड़ी को **Wonder Tree व भारतीय मरुस्थल का सुनहरा वृक्ष** भी कहा जाता है।
- खेजड़ी के सर्वाधिक वृक्ष शेखावाटी क्षेत्र में देखे जा सकते हैं। खेजड़ी के सर्वाधिक वृक्ष **नागौर जिले में देखे जाते हैं।** यह राज्य में वन क्षेत्र के 2/3 भाग में पाया जाता है।
- खेजड़ी के वृक्ष की पूजा **विजय दशमी / दशहरे (आश्विन शुक्ल - दशमी)** के अवसर पर की जाती है।
- खेजड़ी के वृक्ष के नीचे **गोगा जी व झुंझार बाबा के मंदिर** बने होते हैं।
- खेजड़ी को **हरियाणवी व पंजाबी भाषा में जांटी** के नाम से जाना जाता है। खेजड़ी को **तमिल भाषा में पेयमेय** के नाम से जाना जाता है। खेजड़ी को **कन्नड़ भाषा में बन्ना-बन्नी** के नाम से जाना जाता है। खेजड़ी को **सिंधी भाषा में छोकड़ा** के नाम से जाना जाता है। खेजड़ी को **बंगाली भाषा में शाईगाछ** के नाम से जाना जाता है।
- खेजड़ी को **विश्नोई संप्रदाय में शमी** के नाम से जाना जाता है।
- खेजड़ी को **स्थानीय भाषा में सीमलो** कहा जाता है। खेजड़ी की हरी फलियां सांगरी (फल गर्मी में लगते हैं) कहलाती हैं तथा पुष्प मीझर कहलाता है। खेजड़ी की सूखी फलियां खोखा कहलाती हैं। खेजड़ी की पत्तियों से बना चारा लूंम/लूंग कहलाता है।
- वैज्ञानिकों ने खेजड़ी के वृक्ष की आयु पांच हजार वर्ष बताई है। राज्य में सर्वाधिक प्राचीन खेजड़ी के दो वृक्ष एक हजार वर्ष पुराने **मांगलियावास गांव (अजमेर)** में हैं। मांगलियावास गांव में **हरियाली अमावस्या (श्रावण)** को वृक्ष मेला लगता है।
- खेजड़ी के वृक्ष को **सेलेस्ट्रेना व ग्लाइकोट्रमा** नामक कीड़े नुकसान पहुंचा रहे हैं।
- माटो** :- बीकानेर के शासकों द्वारा प्रतीक चिह्न के रूप रूपये में खेजड़ी के वृक्ष को अंकित करवाया।



- ऑपरेशन खेजड़ा नमक अभियान 1991 में चलाया गया।
- वन्य जीवों के रक्षा के लिए राज्य में सर्वप्रथम बलिदान 1604 में जोधपुर के रामसडी गांव में करमा व गौरा के द्वारा दिया गया
- वन्य जीवों की रक्षा के लिए राज्य में दूसरा बलिदान 1700 में नागौर के मेड़ता परगना के पोलावास गांव में बूंचो जी के द्वारा दिया गया
- खेजड़ी के लिए प्रथम बलिदान अमृता देवी बिश्नोई ने 1730 में 363 लोगों के साथ जोधपुर के खेजड़ली ग्राम या गुढा बिश्नोई गांव में भाद्रपद शुक्ल दशमी को दिया।
- भाद्रपद शुक्ल पक्ष की दशमी को तेजादशमी के रूप में मनाया जाता है।
- भाद्रपद शुक्ल दशमी को विश्व का एकमात्र वृक्ष मेला खेजड़ली गांव में लगता है। बिश्नोई सम्प्रदाय के द्वारा दिया गया यह बलिदान साका या खड़ाना कहलाता है।
- खेजड़ली बलिदान के समय जोधपुर का राजा अभयसिंह था। अभयसिंह के आदेश पर गिरधर दास के द्वारा 363 लोगों की हत्या की गई।
- खेजड़ली दिवस प्रतिवर्ष वर्ष 12 सितंबर को मनाया जाता है। प्रथम खेजड़ली दिवस 12 सितम्बर, 1978 को मनाया गया।
- अमृता देवी वन्य जीव पुरस्कार की शुरुआत 1994 में की गई। खेजड़ली आंदोलन चिपको आंदोलन का प्रेरणा स्रोत रहा है। वन्य जीवों के संरक्षण के लिए दिये जाने वाला सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार अमृता देवी वन्य जीव पुरस्कार है। यह प्रथम पुरस्कार गंगाराम बिश्नोई (जोधपुर) को दिया गया। अमृतादेवी मृग वन खेजड़ली गाँव (जोधपुर ग्रामीण) स्थित है।

6. राजस्थान राज्य खेल: बास्केटबाल

- बास्केटबाल को राज्य खेल का दर्जा :- 1948
- खिलाड़ियों की संख्या :- 5
- बास्केटबाल अकादमी जैसलमेर में स्थित है।
- महिला बास्केट बाल अकादमी जयपुर में स्थित है।

7. राजस्थान राज्य गीत : केसरिया बालम

- इस गीत को सर्वप्रथम उदयपुर की मांगी बाई के द्वारा गाया गया।
- इसे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति दिलाने का श्रेय बीकानेर की अल्लाजिल्ला बाई को है। अल्लाजिल्ला बाई को राजस्थान की मरू कोकिला कहा जाता है।
- यह गीत माण्ड गायिकी शैली में गाया जाता है।
- माण्ड गायिकाओं के नाम - स्व हाजन अल्ला-जिल्ला बाई (बीकानेर), स्व. गवरी देवी (बीकानेर), मांगी बाई (उदयपुर), गवरी देवी (पाली)

8. राजस्थान राज्य का शास्त्रीय नृत्य : कथक

- कथक उत्तरी भारत का प्रमुख नृत्य है।

- दक्षिणी भारत का प्रमुख नृत्य भरतनाट्यम है।
- कथक का भारत में प्रमुख घराना - लखनऊ
- कथक का राजस्थान में प्रमुख घराना - जयपुर
- कथक के जन्मदाता भानूजी महाराज को माना जाता है

9. राजस्थान राज्य की राजधानी 'जयपुर'

- जयपुर को राजधानी 30 मार्च 1949 को बनाया गया।
- जयपुर को राजधानी श्री पी सत्यनारायण राव समिति की सिफारिश पर बनाया गया।
- स्थापना - सवाई जयसिंह द्वितीय द्वारा, 18 नवम्बर 1727
- वास्तुकार - विद्याधर भट्टाचार्य
- जयपुर के निर्माण के बारे में बुद्धि विलास नामक ग्रंथ से जानकारी मिलती है।
- जयपुर का निर्माण जर्मनी के शहर द एल्ट स्टड एर्लंग के आधार पर करवाया गया है।
- जयपुर का निर्माण चौपड़ पैटर्न के आधार पर किया गया है।
- जयपुर को गुलाबी रंग में रंगवाने का श्रेय रामसिंह द्वितीय को है।

10. राजस्थान राज्य लोक नृत्य : घूमर

- घूमर को राज्य की आत्मा के उपनाम से जाना जाता है।
- घूमर के तीन रूप हैं
- झूमरिया - बालिकाओं द्वारा किया जाने वाला नृत्य
- लूर - गरासिया जनजाति की स्त्रियों द्वारा किया जाने वाला नृत्य
- घूमर - इसमें सभी स्त्रियां भाग लेती हैं

अध्याय - 6

राजस्थान के प्रसिद्ध नगर एवं स्थल इत्यादि

नोट:-

यह अध्याय आपको राजस्थान के भूगोल में भाग- 2 के अध्याय- 13 राजस्थान के पर्यटन स्थल में पढ़ने को मिलेगा

अध्याय - 7

राजस्थान के प्रमुख उद्योग

राजस्थान में प्रमुख उद्योग - वर्तमान समय में चीन सूती वस्त्र के उत्पादन में विश्व में प्रथम स्थान रखता है।

- सूती कपड़ों के लिए इंग्लैंड का मैनचेस्टर (Manchester) शहर प्रसिद्ध है।
- शंघाई को चीन का मैनचेस्टर (Manchester) कहा जाता है।
- जापान का मैनचेस्टर ओसाका को कहा जाता है।
- भारत का मैनचेस्टर अहमदाबाद को कहा जाता है।
- उत्तरी भारत का मैनचेस्टर कानपुर को कहा जाता है।
- दक्षिण भारत का मैनचेस्टर कोयंबटूर को कहा जाता है।

राजस्थान का सूती वस्त्र उद्योग - राजस्थान का मैनचेस्टर भीलवाड़ा को कहा जाता है।

- नवीन मैनचेस्टर के नाम से भिवाड़ी (अलवर) को जाना जाता है। कलकत्ता में भारत की प्रथम सूती मील 1818 में खोली गई।
- राजस्थान का सबसे प्राचीन एवं सुसंगठित उद्योग सूती वस्त्र उद्योग है।
- राजस्थान की प्रथम सूती वस्त्र मिल 'दी कृष्णा मिल्स लिमिटेड' की स्थापना 1889 में सेठ दामोदर दास राठी व श्याम जी कृष्ण वर्मा ने ब्यावर में की।
- 'दी कृष्णा मील ब्यावर' कार्यशील हथकरघों की दृष्टि से सबसे बड़ी सूती वस्त्र मिल है।
- राजस्थान में सबसे बड़ी सूती वस्त्र मील 'उम्मेद मिल्स' पाली में है। राजस्थान अपने वर्तमान स्वरूप में 1 नवम्बर 1956 को आया, इस समय राज्य में 7 सूती वस्त्र मिलें थीं।
- वर्तमान में राज्य में 23 सूती वस्त्र मिलें स्थापित हैं। राज्य में सूती मिलों को तीन भागों में विभाजित किया गया है।

सार्वजनिक क्षेत्र की सूती मिलें- एडवर्ड मिल्स (ब्यावर) 1906

- श्री महालक्ष्मी मिल्स (ब्यावर) 1925
- श्री विजय कॉटन मिल्स (विजयनगर)

सहकारी क्षेत्र की मिले- राजस्थान सहकारी कताई मिल लिमिटेड गुलाबपुरा (भीलवाड़ा)।

- श्री गंगानगर सहकारी कताई मिल लि. हनुमानगढ़
- गंगापुर सहकारी कताई मिल लि. गंगापुर (भीलवाड़ा)।
- राजस्थान में निजी क्षेत्र में 17 मिलों की स्थापना की गई है। कंप्यूटर एडेड डिजाइन सेंटर भीलवाड़ा में स्थापित किया गया है।

राजस्थान की प्रमुख सूती वस्त्र मिलें

1. एडवर्ड मिल्स लिमिटेड ब्यावर
2. महालक्ष्मी मिल्स लिमिटेड ब्यावर
3. मेवाड़ टेक्सटाइल मिल्स भीलवाड़ा
4. महाराजा उम्मेद सिंह मिल्स लि. पाली
5. सार्दूल टेक्सटाइल मिल्स लि. श्रीगंगानगर
6. राजस्थान स्पिनिंग एण्ड जिनीविंग मिल्स भीलवाड़ा
7. आदित्य मिल्स किशनगढ़
8. उदयपुर कॉटन मिल्स उदयपुर
9. राजस्थान टेक्सटाइल मिल्स भवानी मण्डी
10. गंगापुर को ऑपरेटिव स्पिनिंग मिल्स गंगापुर
11. श्री गोयल इंडस्ट्रीज कोटा
12. सुदर्शन टेक्सटाइल्स कोटा
13. बाँसवाड़ा सिन्थेटिक्स बासवाड़ा
14. विजय कॉटन मिल्स विजयनगर
15. बाँसवाड़ा फेब्रिक्स बाँसवाड़ा
16. व्स्टेड स्पिनिंग मिल्स, लाडनू, डीडवाना-कुचामन

चीनी उद्योग - राजस्थान में सर्वप्रथम चीनी मील चित्तौड़गढ़ जिले के भोपाल सागर नामक नगर में 'मेवाड़ शूगर मील' के नाम से सन् 1932 में निजी क्षेत्र में खोली गई। चीनी बनाने का दूसरा कारखाना सन् 1937 में गंगानगर में गंगानगर शूगर मिल्स के नाम से प्रारंभ किया गया।

- 1956 से 'गंगानगर शूगर मिल्स' सार्वजनिक क्षेत्र में आ गई है। चुकन्दर से चीनी बनाने के लिए श्रीगंगानगर शूगर मिल्स लिमिटेड में एक योजना 1968 में आरंभ की गई थी।
- श्री गंगानगर शूगर मील को वर्तमान में करणपुर के कमीनपुरा गाँव में स्थापित किया जाएगा। दी गंगानगर शूगर मिल्स शराब बनाने का कार्य भी करती है। अजमेर, अटस (बांरा) प्रतापगढ़ तथा जोधपुर में भी इसके केन्द्र हैं। रॉयल हेरिटेज लिकर, कैसर कस्तुरी ब्राण्ड गंगानगर शूगर मील की उच्च गुणवत्ता वाली शराब है।

महत्वपूर्ण तथ्य- 1965 में बूंदी जिले के केशोरायपाटन में चीनी मील सहकारी क्षेत्र में स्थापित की गई। 1976 में उदयपुर में चीनी मील निजी क्षेत्र में स्थापित की गई। चीनी उद्योग के उत्पादन व दक्षता में वृद्धि करने के उद्देश्य से विद्यमान कानूनों में परिवर्तन का सुझाव देने के लिए V C. महाजन समिति का गठन किया गया।

सीमेंट उद्योग - सीमेंट उत्पादन की दृष्टि से राजस्थान, भारत का एक अग्रणी राज्य है। राज्य में चित्तौड़गढ़ जिला सीमेंट उद्योग के लिए सबसे अनुकूल जिला है।

1904 में सर्वप्रथम समुद्री सीपियों से सीमेंट बनाने का प्रयास मद्रास (चैन्नई) में किया गया था।

- राज्य में सर्वप्रथम क्लीक निकसन् कम्पनी द्वारा 1915 में लाखेरी, बूंदी में सीमेंट संयंत्र स्थापित किया गया।
- दक्षिण एशिया का सबसे बड़ा सीमेंट कारखाना 'जयपुर उद्योग लि.' सवाई माधोपुर में स्थापित किया गया है, जो वर्तमान में बंद है।
- सीमेंट की "श्री सीमेंट कम्पनी" जो की 'ब्यावर' में स्थित है। यह उत्तरी भारत की सबसे बड़ी कम्पनी है।
- राजस्थान में सीमेंट का सर्वाधिक उत्पादन करने वाला कारखाना ग्रासिम सीमेंट लिमिटेड, कोटपूतली-बहरोड़ जिले में स्थित है। इसकी स्थापना 2010 में की गयी। यह एशिया का सबसे बड़ा सीमेंट कारखाना है।
- भारत के कुल सीमेंट कारखानों में से सर्वाधिक (23) राजस्थान में स्थित हैं।

सफेद सीमेंट - सफेद सीमेंट का प्रथम उद्योग गोठन (नागौर) में स्थापित किया गया सफेद सीमेंट के दो कारखाने गोठन (नागौर) तथा एक कारखाना खारिया खंगार, जोधपुर में स्थापित किया गया है।

- मांगरोल (चित्तौड़गढ़) में सफेद सीमेंट 'का चौथा कारखाना स्थापित किया गया है।
- खारिया खंगार (जोधपुर ग्रामीण) कारखाना राज्य में सफेद सीमेंट का सबसे बड़ा सीमेंट कारखाना बीडला कम्पनी द्वारा स्थापित है। राज्य का सीमेंट उत्पादन की दृष्टि से भारत में प्रथम स्थान है। पोर्टलैण्ड एवं पौजलाना ये दोनों सीमेंट की विशिष्ट किस्में हैं। पोर्टलैण्ड सीमेंट का उत्पादन DLF कम्पनी द्वारा किया जाता है।
- DLF सीमेंट कम्पनी द्वारा ब्यावर जिले के पाटन गाँव में सीमेंट कारखाने की स्थापना की गयी है।
- राजस्थान में मिनी सीमेंट के कारखाने कोटपूतली, नीमकाथाना, हिडॉन सिटी, आबूरोड़ तथा बॉसवाड़ा में स्थापित किये गये हैं। 'मंगलम सीमेंट संयंत्र' मोडक (कोटा) में, 1982 में स्थापित किया गया।
- सवाई माधोपुर जिले में त्रिशूल छाप सीमेंट का निर्माण होता है। चित्तौड़गढ़ में चेतक छाप सीमेंट का निर्माण होता है।

काँच उद्योग- राजस्थान सिलिका उत्पादन की दृष्टि से हरियाणा के बाद देश में दूसरे स्थान पर है। काँच उद्योग हेतु सीसा, सोडियम, सल्फेट, बालु मिट्टी सिलिका कच्चे माल के रूप प्रयुक्त होते हैं। राजस्थान के धौलपुर जिले में काँच उद्योग सर्वाधिक फैला हुआ है।

- घीलोड, नीमराना (कोटपूतली-बहरोड़) में रीको द्वारा सिरैमिक जोन बनाया जा रहा है।
- 'दी हाई टेक्नीकल प्रोसीजन ग्लास वर्क्स' धौलपुर में स्थित है। राज्य सरकार का यह उद्योग गंगानगर शुगर मील के लिए कांच बोतल निर्माण करता है। वर्तमान में यह बंद है। 'धौलपुर ग्लास वर्क्स' धौलपुर में निजी क्षेत्र का

उपक्रम है। सेम्कोर ग्लास इण्डस्ट्रीज कोटा में स्थित है। इस उद्योग में सैमसंग कम्पनी द्वारा पिक्चर ट्यूब का निर्माण किया जाता है।

- 'बॉश एण्ड लाम्ब लि.' कंपनी भिवाडी (खैरथल-तिजारा) में स्थित है। इस फैक्ट्री में लेंस एवं चश्मे का निर्माण किया जाता है। सिरैमिक पार्क की स्थापना बीकानेर में की गई है।

ऊन उद्योग - राजस्थान में भारत की लगभग 16.7 प्रतिशत भेड़े पाली जाती हैं। राजस्थान देश की लगभग 40 प्रतिशत ऊन उत्पादित करता है। ऊन उत्पादन में राज्य का देश में प्रथम स्थान है जबकि दूसरा स्थान कर्नाटक का है।

- बीकानेर में एशिया की सबसे बड़ी ऊन मण्डी स्थापित है। ऊन विश्लेषण प्रयोगशाला बीकानेर में स्थित है। जोधपुर में केन्द्रीय ऊन बोर्ड स्थापित किया गया है।
- विदेशी ऊन आयात-निर्यात केन्द्र कोटा में स्थित है। भेड़ ऊन का प्रशिक्षण संस्थान जयपुर में स्थित है। ऊन प्रोसेसिंग हाऊस की स्थापना भीलवाड़ा में की गई है।
- कम्यूटर एडेड कारपेट डिजाइन सेंटर जयपुर में खोला गया है। 'गलीचा प्रशिक्षण केन्द्र' बीकानेर में खोला गया है। ऊनी कपड़े के धागे के 3 कारखाने भीलवाड़ा में हैं।
- "वर्स्टेड स्पिनिंग मिल्स" लाडनू में राजस्थान लघु उद्योग निगम का उपक्रम है।

राज्य में कुल ऊन उद्योग की बड़ी इकाईयां निम्नलिखित प्रकार से हैं

- स्टेट वूलन मिल्स बीकानेर
 - जोधपुर वूलन मिल्स जोधपुर
 - वर्स्टेड स्पिनिंग मिल्स चूरू
 - राजस्थान वूलन मिल्स बीकानेर
- राज्य के शुष्क व अर्द्धशुष्क जिलों में ऊन का उत्पादन अधिक होता है।

वनस्पति घी उद्योग - राज्य में सर्वप्रथम वनस्पति घी उद्योग की स्थापना सन् 1964 में भीलवाड़ा जिले में की गई। राजस्थान में वनस्पति घी बनाने के 9 कारखाने हैं भीलवाड़ा जयपुर, टोंक, चित्तौड़गढ़, उदयपुर व गंगानगर आदि।

- महाराजा वनस्पति घी और आमेर वनस्पति घी अच्छी साख वाला घी है।
- निवाई में केसरी वनस्पति और दुगाँपुरा में रोहिताश वनस्पति घी का उत्पादन किया जाता है।
- विश्वकर्मा क्षेत्र (जयपुर) में स्थित वनस्पति तेल फैक्ट्री का नाम वीर बालक रख दिया गया है।

नमक उद्योग- नमक उत्पादन की दृष्टि से राज्य का भारत में चौथा स्थान है।

- राजस्थान में भारत का लगभग 12 प्रतिशत नमक तैयार होता है।



लिए बाध्य नहीं हैं।	मुख्यमंत्री पद के लिए आमंत्रित कर सकता है।
अनुच्छेद 200 के तहत किसी विधेयक को राष्ट्रपति के लिए आरक्षित रख सकता है।	यदि कार्यकाल के दौरान किसी पदस्थ मुख्यमंत्री की मृत्यु हो जाती है तो अपने विवेक से अन्य को मुख्यमंत्री नियुक्त कर सकता है।
अनुच्छेद 356 के तहत राज्यपाल राष्ट्रपति शासन की सिफारिश कर सकता है।	मंत्रिपरिषद् भंग करने के संबंध में (विशेष परिस्थितियों में)
अनुच्छेद 167 के तहत मुख्यमंत्री से सुचना लेने के संबंध में।	
राज्य विधानसभा को भंग करने में	

राजस्थान में राज्यपाल- राजस्थान राज्य के प्रथम राज्यपाल सरदार गुरुमुख निहाल सिंह थे।

- राजस्थान के प्रथम कार्यवाहक राज्यपाल जगत नारायण जी थे। 30 मार्च, 1949 - 31 अक्टूबर, 1956 तक राजस्थान में राजप्रमुख का पद था। इस पद पर जयपुर के महाराजा सवाई मानसिंह-II को नियुक्त किया गया जो राजस्थान के पहले राज्यप्रमुख थे जिन्हें राज्यपाल के समकक्ष माना जाता है। 1 नवंबर, 1956 को संविधान संशोधन द्वारा राजस्थान में राज्यप्रमुख व्यवस्था को समाप्त कर दिया गया था।
- राजस्थान राज्य की प्रथम महिला राज्यपाल श्रीमती

प्रतिभा पाटिल बनी, दूसरी महिला राज्यपाल श्रीमती प्रभाराव तथा श्रीमती मार्गेट अल्वा राजस्थान की तीसरी महिला राज्यपाल थी।

- राज्यपाल डॉ संपूर्णानंद के कार्य काल में राज्य में पहली बार 13 मार्च 1967 से 26 अप्रैल 1967 तक राष्ट्रपति शासन लागू हुआ था।
 - अब तक चार राज्यपाल की अपने पद पर रहकर मृत्यु हुई है -
1. दरबारसिंह (वर्ष 1998)
 2. निर्मलचंद्र जैन (वर्ष 2003)
 3. शैलेंद्रकुमार (वर्ष 2009)
 4. प्रभाराव (वर्ष 2010)

NOTE - श्रीमती प्रभाराव राजस्थान की प्रथम महिला राज्यपाल थी जिनकी पद पर रहते हुए मृत्यु हुई।

- राजस्थान के प्रथम राज्यपाल जिन्होंने पद से त्यागपत्र दिया- **मदन लाल खुराना**
- दूसरे राज्यपाल जिन्होंने पद से त्यागपत्र दिया- **प्रतिभा पाटिल**
- राजस्थान के ऐसे राज्यपाल हैं जो लोकसभा अध्यक्ष भी रहे हैं- **बलिराम भगत**
- राजस्थान के प्रथम राज्यपाल जिन्हें बर्खास्त किया गया- **रघुकुल तिलक**
- राजस्थान में सर्वाधिक कार्यकाल वाले राज्यपाल- **गुरुमुख निहाल सिंह**
- राजस्थान में न्यूनतम कार्यकाल वाले राज्यपाल- **टी.वी. राजेश्वर**
- राजस्थान में अब तक 17 बार कार्यवाहक राज्यपाल बने जा चुके हैं।
- वर्तमान में कलराज मिश्र राजस्थान के राज्यपाल हैं।
- राजस्थान के राज्यपाल का ग्रीष्मकालीन प्रवास माउंट आबू राजस्थान में स्थित राजभवन में होता है यह भवन 1868 में भारत के गवर्नर जनरल के ए. जी. जी. के रेजिडेंस के तौर पर बनाया गया था।

राजस्थान के राज्यपालों की सूची -

क्र.सं.	राज्यपाल	कार्यकाल
1.	सवाई मानसिंह-II (प्रथम राजप्रमुख)	30 मार्च, 1949 - 31 अक्टूबर, 1956
2.	सरदार गुरुमुख निहाल सिंह (प्रथम राज्यपाल)	1 नवम्बर, 1956 - 15 अप्रैल, 1962
3.	डॉ. संपूर्णानंद	16 अप्रैल 1962 - 15 अप्रैल, 1967
4.	सरदार हुकुमसिंह	16 अप्रैल, 1967 - 19 नवम्बर, 1970
5.	जस्टिस जगतनारायण (कार्यवाहक)	20 नवम्बर, 1970 - 23 दिसम्बर, 1970

6.	सरदार हुकुमसिंह	24 दिसम्बर, 1970 - 30 जून, 1972
7.	सरदार जोगिन्दर सिंह	1 जुलाई, 1972 - 14 फरवरी, 1977
8.	जस्टिस वेदपाल त्यागी (कार्यवाहक)	15 फरवरी, 1977 - 11 मई, 1977
9.	श्री रघुकुल तिलक	12 मई, 1977 - 8 अगस्त, 1981
10.	जस्टिस के.डी. शर्मा (कार्यवाहक)	8 अगस्त, 1981 - 5 मार्च, 1982
11.	एअरचीफमार्शल ओ.पी. मेहरा	6 मार्च, 1982 - 4 जनवरी, 1985
12.	जस्टिसपी.के. बनर्जी (कार्यवाहक)	5 जनवरी, 1985 - 31 जनवरी, 1985
13.	एअरचीफ मार्शल ओ.पी. मेहरा	1 फरवरी, 1985 - 3 नवम्बर, 1985
14.	जस्टिस डी.पी. गुप्ता (कार्यवाहक)	4 नवम्बर, 1985 - 19 नवम्बर, 1985
15.	जस्टिस जगदीश शरण वर्मा (कार्य.)	20 नवम्बर, 1985 - 14 अक्टूबर, 1987
16.	श्री वसन्तराव पाटिल	15 अक्टूबर, 1987 - 19 फरवरी, 1988
17.	श्री सुखदेव प्रसाद	20 फरवरी, 1988 - 2 फरवरी, 1989
18.	जस्टिस जगदीश शरण वर्मा (कार्य.)	3 फरवरी, 1989 - 19 फरवरी, 1989
19.	श्री सुख देव प्रसाद	20 फरवरी, 1989 - 2 फरवरी, 1990
20.	श्री मिला पचंद जैन (कार्यवाहक)	3 फरवरी, 1990 - 13 फरवरी, 1990
21.	प्रो. देवीप्रसाद चटोपाध्याय	14 फरवरी, 1990 - 25 अगस्त, 1991
22.	डॉ स्वर्ण सिंह (कार्यवाहक)	26 अगस्त, 1991 - 4 फरवरी, 1993
23.	डॉ. एम. चेन्नारेड्डी	5 फरवरी, 1992 - 30 मई, 1993
24.	श्री धनिक लाल मंडल (कार्यवाहक)	31 मई, 1993 - 29 जून, 1993
25.	श्री बलि राम भगत	30 जून, 1993 - 30 अप्रैल, 1998
26.	सरदार दरबारा सिंह	1 मई, 1998 - 23 मई, 1998
27.	श्री एन.एल. टिबेरवाल (कार्यवाहक)	24 मई, 1998 - 15 जनवरी, 1999
28.	जस्टिस अंशुमान सिंह	16 जनवरी, 1999 - 13 मई, 2003
29.	श्री निर्मल चंद्र जैन	14 मई, 2003 - 13 जनवरी, 2004
30.	श्री कैलाश पति मिश्रा (कार्यवाहक)	22 सितम्बर, 2003 - 13 जनवरी, 2004
31.	श्री मदनलाल खुराना	14 जनवरी, 2004 - 31 अक्तूबर, 2004
32.	श्री टी.वी. राजेश्वर (कार्यवाहक)	1 नवम्बर, 2004 - 7 नवम्बर, 2004
33.	श्री मति प्रतिभा पाटील	8 नवम्बर, 2004 - 23 जून, 2007

34.	डॉ ए. आर. किदवई (कार्यवाहक)	23 जून, 2007 - 5 सितम्बर, 2007
35.	श्री शैलेन्द्र कुमार सिंह	6 सितम्बर, 2007 - 9 जुलाई, 2009
36.	श्री रामेश्वर ठाकुर (कार्यवाहक)	10 जुलाई, 2009 - 22 जुलाई, 2009
37.	श्री शिलेन्द्र कुमार सिंह	23 जुलाई, 2009 - 24 जनवरी, 2010
38.	श्री मती प्रभाराव (कार्यवाहक)	03 दिसम्बर, 2009 - 24 जनवरी, 2010
39.	श्रीमती प्रभाराव	25 जनवरी, 2010 - 26 अप्रैल, 2010
40.	श्री शिवराज पाटिल (कार्यवाहक)	28 अप्रैल, 2010 - 11 मई, 2012
41.	श्रीमती मार्पोट आलवा	12 मई, 2012 - 7 अगस्त, 2014
42.	श्री रामनाईक (कार्यवाहक)	8 अगस्त, 2014 - 3 सितम्बर, 2014
43.	श्री कल्याणसिंह	8 सितम्बर, 2014 - 8 सितम्बर, 2019
44.	श्री कलराज मिश्र	9 सितम्बर, 2019 से लगातार

• मुख्यमंत्री और मंत्रीपरिषद्

- मुख्यमंत्री किसी राज्य की कार्यपालिका का वास्तविक प्रधान होता है। वह राज्य विधानसभा का नेता होता है। राज्य की सर्वोच्च कार्यपालिका शक्ति मुख्यमंत्री के हाथों में है। वह राज्य का वास्तविक शासक/तथ्यत प्रमुख / डी-फैक्टो हेड होता है।

- मुख्यमंत्री की नियुक्ति राज्यपाल के द्वारा संविधान के अनुच्छेद 164 (1) के तहत की जाती है।

- सामान्यतः, राज्यपाल बहुमत प्राप्त दल के नेता को मुख्यमंत्री नियुक्त करता है। लेकिन यदि चुनावों में किसी भी दल को स्पष्ट बहुमत प्राप्त नहीं हुआ है, उस स्थिति में राज्यपाल स्वविवेक से मुख्यमंत्री नियुक्त करता है। उसे एक माह के भीतर सदन में विश्वास मत प्राप्त करने के लिए कहता है।

राज्यपाल स्वविवेक द्वारा मुख्यमंत्री की नियुक्ति ऐसे समय पर करता है जब कार्यकाल के दौरान किसी मुख्यमंत्री की मृत्यु हो जाए और कोई उत्तराधिकारी तय नहीं हो या चुनावों में किसी दल को स्पष्ट बहुमत प्राप्त नहीं हुआ हो।

NOTE- केन्द्र शासित प्रदेशों में (जहाँ विधानसभा है) मुख्यमंत्रियों की नियुक्ति, राष्ट्रपति करता है। वर्तमान में भारत के तीन केन्द्र शासित प्रदेशों क्रमशः पुदुच्चेरी, दिल्ली और जम्मू- कश्मीर में विधानसभाओं का प्रावधान है।

- अनुच्छेद 164 (3)** मुख्यमंत्री व मंत्रियों को शपथ राज्यपाल दिलाता है। राज्य का मुख्यमंत्री कार्यग्रहण से पूर्व राज्यपाल के समक्ष पद व गोपनीयता की शपथ ग्रहण करता है। मुख्यमंत्री व मंत्रियों की शपथ का प्रारूप भारतीय संविधान की अनुसूची 3 में मिलता है।

अनुच्छेद 164 (4) मुख्यमंत्री एवं मंत्रियों की योग्यता भारतीय संविधान में मुख्यमंत्री पद के लिए योग्यताएँ आवश्यक हैं जो एक मंत्री पद के लिए होती हैं। जैसे— (1) न्यूनतम आयु 25 वर्ष हो। (2) राज्य विधानमण्डल के दोनों में से किसी एक सदन का सदस्य हो।

NOTE- यदि मुख्यमंत्री विधानमण्डल के किसी भी सदन का सदस्य न भी हो तो 6 माह तक मुख्यमंत्री रह सकता है। 6 माह के भीतर उसे विधानमण्डल के किसी एक सदन की सदस्यता ग्रहण करनी पड़ती है अन्यथा त्यागपत्र देना पड़ता है। मुख्यमंत्री सामान्यतः विधानमण्डल के निम्न सदन (विधान सभा) का सदस्य होता है, लेकिन उच्च सदन (विधान परिषद्) के सदस्य को भी मुख्यमंत्री बनाया जा सकता है यदि उस राज्य में द्विसदनात्मक विधान मण्डल है तो।

NOTE- यदि मुख्यमंत्री विधानपरिषद् का सदस्य है तो वह

- राष्ट्रपति के चुनाव में भाग नहीं ले सकता।
- वह अविश्वास प्रस्ताव पर वोट नहीं कर सकता है क्योंकि अविश्वास प्रस्ताव विधानसभा में लाया जाता है।

- अनुच्छेद 164 (5)** मुख्यमंत्री के वेतन एवं भत्तों व कार्यकाल

मुख्यमंत्री के वेतन एवं भत्तों का निर्धारण राज्य विधानमण्डल द्वारा किया जाता है। वर्तमान में राजस्थान के मुख्यमंत्री को 75,000 रु प्रतिमाह वेतन मिलता है। (1 अप्रैल, 2019 के बाद) स्मरणीय तथ्य : मुख्यमंत्री का कार्यकाल 5 वर्ष होता है, परन्तु वह राज्यपाल के प्रसादपर्यंत अपने पद पर बना रहता है। अर्थात जब तक कि उसका विधानसभा में बहुमत है। लेकिन यदि

विलयन में OH-आयन सांद्रता में वृद्धि दर्शाता है, अर्थात्, एलकली की प्रबलता में वृद्धि।

- अधिकांश खाद्य फसलें 7-7.8 के पीएच पर सबसे अधिक पनपती हैं। यदि मिट्टी बहुत अम्लीय होती है तो पीएच को चूना (या बुझा हुआ चूना) मिलाकर बढ़ाया जा सकता है, जो मिट्टी में अधिक अम्ल को निष्क्रिय कर देता है। इसी प्रकार, यदि मिट्टी बहुत क्षारीय होती है तो इसके पीएच को जिप्सम या कुछ अन्य पदार्थ मिलाकर कम किया जा सकता है, जो मिट्टी में मौजूद अतिरिक्त क्षार को निष्क्रिय कर सकते हैं।
- हमारे पेट का मीडियम अत्यधिक अम्लीय है और उसका पीएच लगभग 1.2 है। हमारे पेट में हाइड्रोक्लोरिक अम्ल स्रावित होता है, जो भोजन के पाचन में मदद करता है। मैग्नीशियम हाइड्रॉक्साइड (मैग्नीशिया ऑफ़ मिल्क), एक मंद क्षार, एक एंटीसिड है जो अतिरिक्त अम्ल को निष्क्रिय करता है।
- जब मुंह का पीएच 5.5 से कम होता है, तो दन्त क्षय शुरू हो जाता है।
- अम्ल वर्षा - जब वर्षा जल का पीएच मान 5.6 से कम होता है, तो इसे अम्ल वर्षा कहते हैं।
- जठर रस - 1.2
- नीबू का रस- 2.2
- शुद्ध जल-7.4
- मिल्क ऑफ़ मैग्नीशिया - 10
- सोडियम हाइड्रॉक्साइड विलयन- 14
- नोट - शुक्र का वायुमंडल सल्फ्यूरिक अम्ल के मोटाई वाले सफेद और पीले बादलों से बना है।

अध्याय - 2

तत्त्व, यौगिक एवं मिश्रण

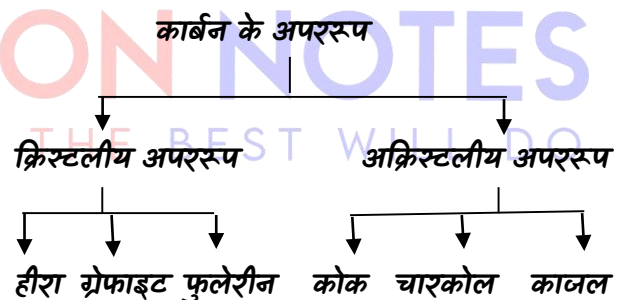
कार्बन और इसके यौगिक

कार्बन (Carbon) -

- कार्बन अधात्विक तत्व है, जो आधुनिक आवर्त सारणी में समूह-14 और आवर्त-2 में स्थित है। इसका परमाणु क्रमांक 6 तथा इलेक्ट्रॉनिक विन्यास है- $1s^2 2s^2 2p^2$ है। कार्बन सर्वाधिक यौगिकों वाला तत्व है। सभी जीव-संरचनाएँ कार्बन आधारित होती हैं। भूपर्पटी में खनिजों (जैसे- कार्बोनेट, हाइड्रोजन कार्बोनेट, कोयला, पेट्रोलियम) के रूप में 0.02 प्रतिशत कार्बन उपस्थित है। तथा वायुमंडल में 0.03 प्रतिशत कार्बन डाइऑक्साइड उपस्थित है। इसके अतिरिक्त यह सभी जीवधारियों पेड़-पौधों, चट्टानों आदि में पाया जाता है।

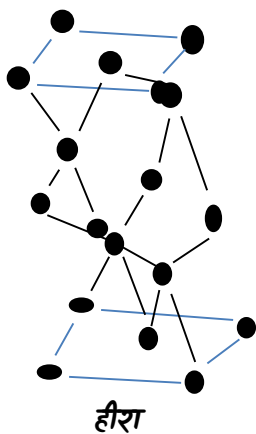
अपरूपता (Allotropy)- वैसे पदार्थ जिनके रासायनिक गुण समान एवं भौतिक गुण भिन्न हो 'अपरूप' कहलाते हैं, और इस घटना को 'अपरूपता' कहते हैं।

कार्बन क्रिस्टलीय तथा अक्रिस्टलीय दो अपरूपों में पाया जाता है।



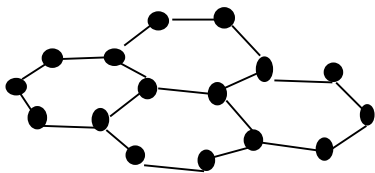
हीरा (Diamond) -

- हीरा ज्ञात कठोरतम पदार्थ है। इस कारण हीरे का उपयोग चट्टानों को बेधने, कठोर औजारों पर धार करने, वस्तुओं पर पॉलिश करने, टंगस्टन आदि धातुओं के तार खींचने में किया जाता है।
- हीरा रासायनिक रूप से बहुत कम क्रियाशील होता है।
- हीरा विद्युत का कुचालक होता है।
- हीरे में एक विशेष चमक उच्च अपवर्तनांक के कारण होती है। यह एक बहुमूल्य रत्न की भांति आभूषणों आदि में उपयोग किया जाता है।
- हीरे में कार्बन परमाणु की त्रिविम चतुष्फलकीय संरचना होती है।
- हीरे की संरचना में sp^3 प्रकार का संकरण पाया जाता है।



ग्रेफाइट (Graphite) - इसे काला सीसा भी कहा जाता है।

- ग्रेफाइट के क्रिस्टल में कार्बन परमाणु 'समष्टभुजों' की परतों के रूप में पाए जाते हैं।
- ग्रेफाइट में कार्बन की परतों के मध्य क्षीण वांडर वाल्स बलों के पाये जाने के कारण ये परतें एक-दूसरे के ऊपर आसानी से फिसल जाती हैं। इसी गुण के कारण ग्रेफाइट नरम होता है व स्नेहक की भांति कार्य करता है।
- ग्रेफाइट में विद्युत चालकता का गुण होने के कारण ग्रेफाइट का उपयोग विद्युत अपघटन में इलेक्ट्रोड बनाने के लिये किया जाता है।
- रासायनिक रूप से कम क्रियाशील तथा उच्च गलनांक होने के कारण ग्रेफाइट का उपयोग 'कूसीबिल' बनाने में किया जाता है।
- ग्रेफाइट का उपयोग लेड पेंसिल बनाने में किया जाता है।
- ग्रेफाइट की संरचना में Sp^2 प्रकार का संकरण पाया जाता है।
- परमाणु शिफ्टों में ग्रेफाइट का उपयोग मंदक के रूप में किया जाता है।



हीरा और ग्रेफाइट में अंतर-

हीरा	ग्रेफाइट
यह अत्यंत कठोर होता है।	यह मुलायम होता है।
यह पारदर्शक, चमकदार है।	यह देखने में काला होता है।
यह विद्युत का कुचालक है।	यह विद्युत का सुचालक है।
ऊष्मीय चालकता बहुत कम	ऊष्मा का मध्यम चालक है।

अपवर्तनांक अधिक	काफी	अपवर्तनांक कम
आभूषण में उपयोग	बनाने में	पेंसिल, इलेक्ट्रोड में उपयोग

फुलेरीन (Fullerene) - यह कार्बन का ठोस क्रिस्टलीय रूप है। इसका अणु गोलाकार होता है, जिसमें मूलतः 60 कार्बन परमाणु होते हैं। वर्तमान में इससे अधिक कार्बन परमाणु वाले फुलेरीन की खोज हो चुकी है। जैसे- C_{70} , C_{84} , C_{90} , C_{120} आदि।

- C_{60} की संरचना सबसे अधिक स्थायी होती है, जिसे बकमिन्सटर फुलर के नाम पर 'बकमिन्सटर फुलेरीन' नाम दिया गया है।
- C_{60} अणु के 32 फलक होते हैं, जिनमें से 20 षटकोणीय तथा 12 पंचकोणीय हैं, जो एक-दूसरे से संयुक्त रहते हैं।
- C_{60} कार्बन का एक अत्यधिक क्रियाशील रूप होता है। C_{60} की अधिक अभिक्रियाशीलता मुख्यतः $C=C$ समूह की असमतलियता के कारण होता है।

कोक (Coke) -

- यह काले भूरे रंग का ठोस होता है।
- वायु की अनुपस्थिति में कोयले के भंजक आसवन से कोक प्राप्त होता है।
- कोक का उपयोग इंजन, बॉयलर व भट्टियों में ईंधन की भांति होता है।
- कोक का उपयोग धातुओं के निष्कर्षण में अपचायक की भांति किया जाता है।

चारकोल (Charcoal) - यह मुलायम, काला व अत्यंत छिद्रयुक्त नरम पदार्थ होता है। इसकी मुख्य तीन किस्में पाई जाती हैं-

काष्ठ चारकोल (Wood Charcoal) - जब लकड़ी को हवा की अपर्याप्त मात्रा में जलाया जाता है तो काष्ठ चारकोल प्राप्त होता है।

- काष्ठ चारकोल के अत्यंत छिद्रयुक्त होने के कारण इसका उपयोग 'गैस मास्क' के रूप में गैसों को अवशोषित करने में किया जाता है।

जंतु चारकोल (Animal Charcoal) - जंतु चारकोल में लगभग 10 प्रतिशत कार्बन होता है, इसे अस्थि कालिख भी कहा जाता है, क्योंकि यह हड्डियों के भंजक आसवन से प्राप्त होता है।

- इसका मुख्य उपयोग चीनी के विलयन को साफ करने में किया जाता है।

चीनी चारकोल (Sugar Charcoal) - यह कार्बन के असंरचनात्मक अपरूपों में से 'शुद्धतम अपरूप' होता है।

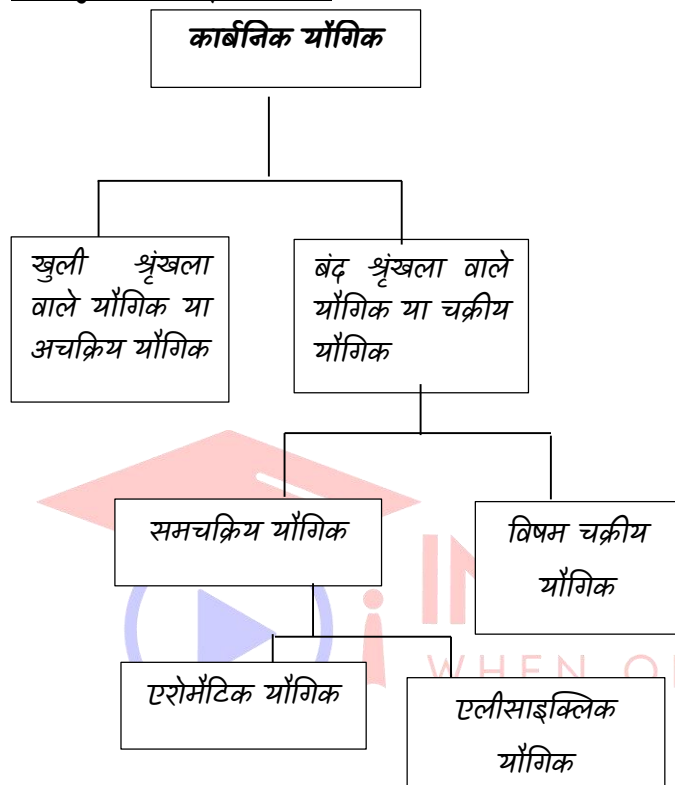
- चीनी पर सल्फ्यूरिक अम्ल (H_2SO_4) की क्रिया द्वारा इसे प्राप्त किया जाता है।

- इसका उपयोग रजक के रूप में होता है।

काजल (Lamp Black)- यह महीन, काले रंग का चूर्ण होता है।

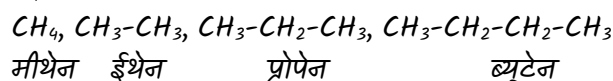
- इसे केरोसिन तेल, तारपीन तेल, पेट्रोलियम आदि कार्बन युक्त पदार्थों को जलाकर प्राप्त किया जाता है।
- काजल में लगभग 95 प्रतिशत कार्बन पाया जाता है तथा इसका उपयोग जूते की पॉलिश, प्रिंटिंग की रगही, आँखों का काजल आदि बनाने के लिये किया जाता है।

कार्बनिक यौगिकों का वर्गीकरण (Classification of Organic Compounds)-



खुली शृंखला वाले यौगिक- वे कार्बनिक यौगिक, जिनमें कार्बन के सभी परमाणु आपस में एक खुली शृंखला में जुड़े रहते हैं, खुली शृंखला वाले यौगिक या अचक्रिय यौगिक या एलिफैटिक यौगिक कहलाते हैं। ग्रीक भाषा में एलिफॉस = वसा (Fat) अर्थात् प्रारंभ में एलिफैटिक शब्द का उपयोग केवल उच्च वसा अम्लों के लिये किया गया था, परन्तु अब शब्द का उपयोग सभी खुली शृंखला वाले यौगिकों के लिये किया जाता है।

उदाहरण:



बंद शृंखला वाले यौगिक - वे कार्बनिक यौगिक, जिनमें कार्बन परमाणु आपस में जुड़कर एक बंद शृंखला या चक्र बनाते हैं, बंद शृंखला वाले यौगिक या चक्रीय यौगिक कहलाते हैं।

समचक्रीय यौगिक (Homocyclic Compounds)-

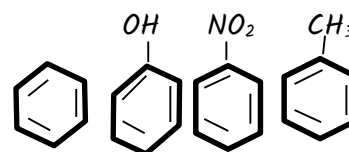
वे चक्रीय यौगिक जिनकी वलय में केवल कार्बन परमाणु होते हैं, समचक्रीय यौगिक कहलाते हैं।

समचक्रीय यौगिक भी दो प्रकार के होते हैं-

(a) एरोमैटिक यौगिक (Aromatic Compounds)-

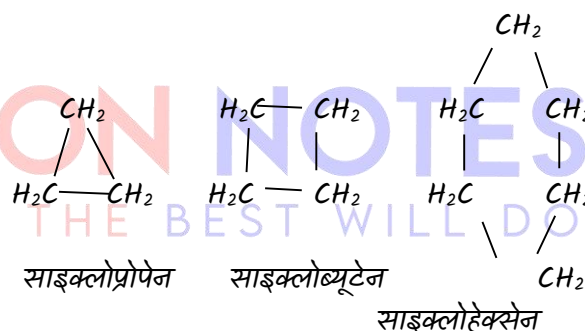
- वे समचक्रीय यौगिक, जिनमें कार्बन की बंद शृंखला 6 कार्बन परमाणुओं द्वारा बनी होती है।
- कार्बन की बंद शृंखला में एकल बंध व युग्म बंध एकांतर क्रम में पाए जाते हैं। इस प्रकार के वलय को बेंजीन रिंग कहा जाता है।
- एरोमैटिक यौगिकों में कम-से-कम एक बेंजीन रिंग अवश्य पाई जाती है।
- एरोमैटिक यौगिकों में कार्बन की प्रतिशत मात्रा एलिफैटिक यौगिकों से अधिक होती है। अतः इनको जलाने पर काले धुएँ की ज्वाला से जलते हैं।

उदाहरण:

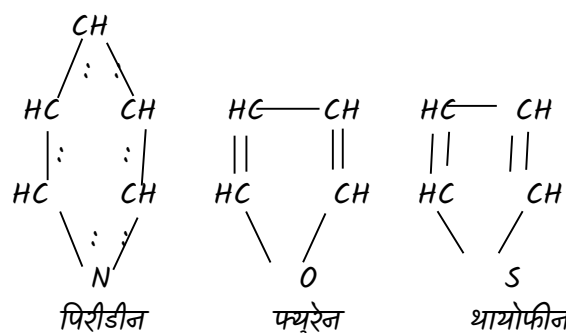


बेंजीन फीनॉल नाइट्रोबेंजीन टालुइन

(b) एलीसाइक्लिक यौगिक - वे समचक्रीय यौगिक, जो एलिफैटिक यौगिकों के समान होते हैं, किन्तु एक बंद वलय बना लेते हैं, एलीसाइक्लिक यौगिक कहलाते हैं।

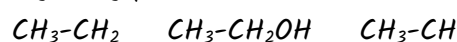


विषमचक्रीय यौगिक - वे चक्रीय यौगिक जिनके वलय में कार्बन परमाणुओं के अतिरिक्त अन्य तत्व (जैसे- N, O, S) भी पाए जाते हैं, विषमचक्रीय यौगिक कहलाते हैं।



संतृप्त एवं असंतृप्त यौगिक -

संतृप्त यौगिक (Saturated Compounds)- वे कार्बनिक यौगिक जिनमें कार्बन-कार्बन परमाणुओं के बीच केवल एकल बंध पाया जाता है, संतृप्त यौगिक कहलाते हैं।





- औद्योगिक स्तर पर एथिलीन का निर्माण पेट्रोलियम भंजन द्वारा किया जाता है।

गुण-

- एथिलीन रंगहीन, ज्वलनशील गैस है जिसकी गंध हल्की मीठी कस्तूरी जैसी होती है। इसे सूँघने में बेहोशी आ जाती है।
- एथिलीन में दो कार्बन परमाणु के बीच द्विबंध होने के कारण यह बहुत अभिक्रियाशील होती है।

बहुलकीकरण :- उच्च दाब व ताप पर ऑक्सीजन(उत्प्रेरक) की उपस्थिति में एथिलीन के कई अणु आपस में जुड़कर एक बड़ा अणु पोलिएथिलीन बनाते हैं, यह क्रिया बहुलकीकरण कहलाती है।

उपयोग - एथिलीन(इथेफोन) का उपयोग कृत्रिम रूप से फलों को पकाने में, निश्चेतक के रूप में तथा पोलिथीन बनाने इत्यादि में किया जाता है।

एसिटिलीन(C_2H_2):- एसिटिलीन एल्काइन (C_nH_{2n-2}) श्रेणी का प्रथम सदस्य है।

- यह भी एक असंतृप्त हाइड्रोकार्बन है जिसका अणुसूत्र C_2H_2 या $HC \equiv CH$ है।

संश्लेषण - प्रयोगशाला में एसिटिलीन प्राप्त करने के लिये कैल्सियम कार्बाइड पर जल की क्रिया कराई जाती है-



- औद्योगिक स्तर पर एसिटिलीन का निर्माण एथेन व भाप के मिश्रण को $1000-1300^\circ C$ ताप पर गर्म करके अथवा पेट्रोलियम के भंजन द्वारा किया जाता है।

गुण-

- एसिटिलीन रंगहीन गैस है, कुछ अशुद्धियों के कारण इसमें लहसुन जैसी गंध आती है।
- संपीड़ित एवं द्रवित एसिटिलीन एक भयंकर विस्फोटक होता है। एसिटिलीन तथा वायु के मिश्रण को जलाने पर भी विस्फोट होता है।
- इसमें दो कार्बन परमाणु त्रिबंध के माध्यम से जुड़े होते हैं जिसके कारण एसिटिलीन बहुत अभिक्रियाशील होती है।

उपयोग-

- एसिटिलीन को ऑक्सीजन में जलाने पर अत्यधिक उच्च ताप (लगभग $3000^\circ C$) उत्पन्न होता है। अतः ऑक्सी एसिटिलीन ज्वाला का उपयोग धातुओं को काटने व वेल्डिंग करने में किया जाता है।

क्लोरोफ्लोरो कार्बन या फ्रियाँन(Chlorofluoro Carbon or Freon):-

- यह एक कार्बनिक यौगिक है, जिसमें कार्बन(C), फ्लोरीन(F) व क्लोरीन(Cl) परमाणु पाए जाते हैं।
- फ्रियाँन उपयोग रेफ्रिजरेटर के लिये प्रशीतक के रूप में, विलायक के रूप में व परिक्षेपण के रूप में किया जाता है।

- CFC एक हरित गृह गैस है, जो ओज़ोन क्षरण के लिये जिम्मेदार है।

मस्टर्ड गैस(Mustard Gas):-

- सामान्य ताप पर यह रंगहीन, गाढ़ा द्रव है। चूँकि इसकी गंध लहसुन या सरसों जैसी होती है। अतः इसे सामान्यतः 'मस्टर्ड गैस' कहते हैं।
- सल्फर डाइक्लोराइड की क्रिया एथिलीन से कराने पर मस्टर्ड गैस प्राप्त होती है।
- मस्टर्ड गैस अत्यधिक जहरीली गैस होती है। मस्टर्ड गैस को त्वचा अवशोषित कर लेती है, जिससे त्वचा पर फफोले पड़ जाते हैं। यह कैंसर के लिये भी उत्तरदायी होती है।
- इसका सर्वप्रथम उपयोग प्रथम विश्वयुद्ध के समय जर्मन सेना द्वारा ब्रिटिश सैनिकों को नुकसान पहुँचाने हेतु किया गया था।

ल्यूसाइट(Lewisite):-

- यह एक रंगहीन, गंधहीन कार्बनिक यौगिक है जिसका उपयोग रासायनिक हथियार के रूप में किया जाता है।
- एसिटिलीन पर आर्सेनिक ट्राइक्लोराइड ($AsCl_3$) की अभिक्रिया कराने पर ल्यूसाइट प्राप्त होता है।
- ल्यूसाइट के प्रभाव से चक्कर, उल्टी, तेज दर्द, ऊतक क्षरण आदि लक्षण प्रकट होने लगते हैं। इसका उपयोग द्वितीय विश्वयुद्ध के समय किया गया था।

अश्रु गैस(Tear Gas):-

- यह एक अविषैली गैस है, जो मनुष्यों के आँसू निकलने के लिये, श्वसन मार्ग में हल्की-सी जलन के लिये प्रभावी है। इसका प्रयोग प्रथम विश्वयुद्ध में किया गया था।
- अश्रु गैस का उपयोग शांति बहाली हेतु भीड़ को तितर-बितर करने के लिये किया जाता है।
- अश्रु गैस के रूप में w-Chloroacetophenone (CN) तथा Ando-Chlorobenzylidene-Malononitrile (CS) आदि रासायनिक यौगिकों का प्रयोग किया जाता है। उल्लेखनीय है की अमोनिया (NH_3) का प्रयोग भी अश्रु गैस के लिये किया जाता है।

क्लोरोफॉर्म ($CHCl_3$) :-

- क्लोरोफॉर्म एक रंगहीन, गाढ़ा द्रव है जिसकी वाष्प सूँघने पर सामान्य निश्चेतना उत्पन्न होती है।
- प्रयोगशाला में क्लोरोफॉर्म बनाने के लिये एथिल एल्कोहल (C_2H_5OH) या एसिटोन पर ब्लीचिंग पाउडर($CaOCl_2$) की क्रिया कराई जाती है।
- क्लोरोफॉर्म का उपयोग शल्यचिकित्सा में सामान्य निश्चेतक के रूप में किया जाता है।
- खर, वसा, मोम, रेजिन आदि के लिये क्लोरोफॉर्म विलायक का कार्य करता है।

आयोडोफॉर्म (CHI_3) :-

- यह एक पीले रंग का क्रिस्टलीय ठोस है।



गुलाबी क्रान्ति	झींगा उत्पादन
इन्द्र धनुषीय क्रान्ति	कृषि से सम्बन्धित क्षेत्रों के विकास हेतु (केन्द्र सरकार द्वारा 2000 में घोषित राष्ट्रीय कृषि नीति)

• राजस्थान की चर्चित पुस्तकें

पुस्तकें	लेखक
विजयी बनो	आचार्य महाश्रवण
रे मनवा मेरे, मैं ही राधा मैं ही कृष्ण	गुलाब कोठारी
दादी की रसोई	कंचन कोठारी
मेवाड़ की लोककला (फड़)	वन्दना जोशी
हिलींग द ब्लू प्लेनेट	बने सिंह
बलपणे री बाता	दीन दयाल शर्मा
राजवंश, भरतपुर अछुती स्मृतियां	रघुसिंह सिंह
फस्ट लेडी प्रेसिडेन्ट	इंद्र दान रतु
हरी दुब का सपना	नन्द भारद्वाज
जगह जैसी जगह	हेमंत शेष
अमीर खातेदार बनाम गरीब खातेदार	नरेश गोयल
एक लोकसेवक की डायरी	जय नारायण गोड
राजस्थान के सात प्रेमाख्यान, दासी की दस्तान, न्यू लाईफ, चोबोली एवं अदर स्टोरीज	विजय दानदेथा
शेष कादम्बरी	अल्का श्रावंगी
कामरेड गोडसे	यशवन्त व्यास
आलोचना री आँख सू	कुन्दन माली
पगरवा शान्ति रो सुरज	दिनेश पंचाल
राजस्थान की राजनीति	विजय भण्डारी
कब्रिस्तान की पंचायत	केदारनाथ सिंह
राजस्थानी भाषा एवं साहित्य	प्रो. कल्याण शेखावत
जिन्ना : इण्डिया पार्टिशन इन डिपेन्डेन्स, ए कॉल टू ऑनर	जसवन्त सिंह
नौकरी करनी है तो भ्रष्टाचार करना ही होगा	सूरजभान सिंह
राजस्थान के रणबांकरे	राजेन्द्र सिंह राठौड़
सोनिया गांधी और भारतीय राजनीति	मानचन्द्र खण्डेला
राजस्थान का लोक देवी-देवता	डॉ. महेंद्र मानावत
ऊँची उड़ान, शाकाहार श्रेष्ठ आहार	डॉ. कुसुम लुनिया

लोकतन्त्र और आम आदमी	भेरू सिंह शेखावत
जयपुर	गिल्स टील्लोटसन
जीवन की सच्चाईयां	मनोहर लाल वनमाली
लेन डोल्लट बोरनस्टेन	प्रो. आर. आर. गुप्ता

• राजस्थान की रियासतों के मुख्य निर्माण कार्य

रियासत का निर्माण	निर्माणकर्ता	स्थान
लक्ष्मी विलास महल	मिर्जा राजा जय सिंह	जयगढ़ दुर्ग
जयगढ़ का किला	मिर्जा राजा जय सिंह	जयपुर
सुख मन्दिर / आराम मन्दिर	मिर्जा राजा जय सिंह	आमेर
शिलादेवी मन्दिर	मान सिंह प्रथम	आमेर
भवानीशंकर मन्दिर	मान सिंह प्रथम	बैराटपुर
महादेव मन्दिर	मान सिंह प्रथम	गया(बिहार)
राधा गोविन्द मन्दिर	मान सिंह प्रथम	वृंदावन उत्तर प्रदेश
आमेर महल	मानसिंह प्रथम	आमेर
पंचमहल	मान सिंह प्रथम	बैराठ (कोटपूतली -बहरोड़)
मानमहल	मान सिंह प्रथम	पुष्कर
जमवारामगढ़ का किला	मान सिंह प्रथम	जमुवा रामगढ़ (जयपुर ग्रामीण)
जलमहल	सवाई जयसिंह	जयपुर
गोविन्द देवजी का मन्दिर	सवाई जयसिंह	जयपुर
नाहरगढ़ का किला	सवाई जयसिंह	जयपुर
चन्द्रमहल	सवाई जयसिंह	जयपुर
सिसोदिया रानी का बाग	सवाई जयसिंह	जयपुर
आमेर की भोजनशाला	सवाई जयसिंह	आमेर
जन्तर-मन्तर	सवाई जयसिंह	जयपुर सहित पाँच जगह
कदमी महल	राजदेव	आमेर
लक्ष्मीनारायण मन्दिर	बालाबाई (पृथ्वीराज)	आमेर
आमेर का किला	भारमल	आमेर



जगत शिरोमणी मन्दिर	कनकावती (मानसिंह प्रथम की पत्नी)	आमेर
मोती इंगरी के महल	सवाईमाधोसिंह	जयपुर
नाहरगढ़ में नौ महल	सवाईमाधोसिंह	नाहरगढ़
ईसरलाट/सरगा सुली	सवाई ईश्वरी सिंह	जयपुर
अल्बर्ट हॉल	रामसिंह द्वितीय	जयपुर
हवामहल	सवाई प्रताप सिंह	जयपुर

• **मारवाड़ रियासत के प्रमुख निर्माण कार्य**

रियासत का निर्माण	निर्माणकर्ता	स्थान
मेहरानगढ़ का किला	राव जोधा	जोधपुर
रानीसर तालाब	जसमादे (राव जोधा)	जोधपुर
फूलेलाव तालाब	फुला भट्टियाणी (राव जोधा)	जोधपुर
नागणेची माता का मन्दिर	राज जोधा	जोधपुर
पोकरण का किला	रीव मालदेव	पोकरण
मालकोट का किला	राव मालदेव	मालकोट
तारागढ़ में रहट का निर्माण	राव मालदेव	तारागढ़
सारण का किला	राव मालदेव	सारण
फतह महल	अजीत सिंह	जोधपुर
मूलनायक मन्दिर	अजीत सिंह	जोधपुर
घनश्याम मन्दिर	अजीत सिंह	जोधपुर
शिखर चन्द्र मन्दिर	रणावतीजी (अजीत सिंह)	जोधपुर
महामन्दिर	मानसिंह	जोधपुर
जसवन्तथडा राजस्थान का ताजमहल)	सरदार सिंह	जोधपुर
शुक्र तालाब (नागौर में 1570 में)	अकबर	नागौर
कचहरी	जसवन्त सिंह	आगरा
चाँद बावड़ी	चाँद कँवर (राव चुड़ा)	जोधपुर
घनसागर तालाब	अतिरंगदे (जसवन्त सिंह)	जोधपुर

राई का बाग	जसवन्तदे (जसवन्त सिंह)	जोधपुर
------------	------------------------	--------

• **मेवाड़ रियासत के प्रमुख निर्माण कार्य**

रियासत का निर्माण	निर्माणकर्ता	स्थान
शिव मंदिर	बाप्पा रावल	एकलिंगजी
कुशल माता मन्दिर	राणा कुम्भा	बदनौर
विजय स्तम्भ	राणा कुम्भा	चित्तौड़गढ़ दुर्ग
कुम्भस्वामी मन्दिर	राणा कुम्भा	चित्तौड़गढ़, अचलगढ़, कुम्भलगढ़
मीरा मंदिर	राणा कुम्भा	एकलिंगजी
श्रृंगार चवरी	राणा कुम्भा	चित्तौड़गढ़
जैन मन्दिर	धरणकशाह(राणा कुम्भा)	रणकपुर
रमा मंदिर	रमा बाई (राणा कुम्भा)	जावर (उदयपुर)
द्वारिका नाथ मन्दिर	मोकल	चित्तौड़गढ़
त्रिभुवन नारायण मन्दिर	भोजपरमार	चित्तौड़गढ़
भोजसर तालाब	भोजपरमार	नागदा
द्वारकानाथ मन्दिर	राज सिंह	कांकोली (राजसमन्द)
श्रीनाथ मन्दिर	राज सिंह	सिंहाड (नाथद्वारा)
अम्बामाता मन्दिर	राज सिंह	उदयपुर
जयसमन्द झील	जय सिंह द्वितीय	उदयपुर
राजसमन्द झील	राज सिंह	राजसमन्द
जगदीश मन्दिर	जगत सिंह प्रथम	उदयपुर
धाय का मन्दिर	नौजूबाई (जगतसिंह प्रथम)	उदयपुर
मोहन मन्दिर	जगत सिंह प्रथम	उदयपुर
सहेलियों की बाड़ी	संग्राम सिंह द्वितीय	उदयपुर
वैद्यनाथ मन्दिर	संग्राम सिंह द्वितीय	भीसारमा उदयपुर
जगत निवास महल	जगत सिंह द्वितीय	उदयपुर
कर्ण विलास महल	कर्ण सिंह	उदयपुर
दिलखुश महल	कर्ण सिंह	उदयपुर
उदयसागर झील	उदय सिंह	उदयपुर



- उपराष्ट्रपति का वेतन भारत भारत की संचित निधि पर भारित होता है।

• भारतीय संसद (विधायिका)

(art. 79-123)

संघीय विधानमंडल (संसद)

- भारतीय संविधान के अनु. 79 के अनुसार संसद के तीन अंग होते हैं - राष्ट्रपति, राज्यसभा और लोकसभा
- भारतीय संसद की संप्रभुता न्यायिक समीक्षा से प्रतिबंधित है।
- संसद में स्थगन प्रस्ताव (adjournment motion) लाने का उद्देश्य सार्वजनिक महत्व के अति आवश्यक मुद्दों पर बहस करना है।

संसद से सम्बंधित अनुच्छेद	
अनु.	सम्बंधित विषय - वस्तु
79	संसद का गठन
80	राज्य सभा की संरचना
81	लोक सभा की संरचना
82	प्रत्येक जनगणना के पश्चात पुनः समायोजन
83	संसद के सदनों की अवधि
84	संसद की सदस्यता के लिए अर्हता
85	संसद के सत्र सत्रावसान एवं विघटन
86	राष्ट्रपति का सदनों को सम्बोधित तथा उनको संदेश देने का अधिकार
87	राष्ट्रपति का विशेष सम्बोधन अभिभाषण
88	सदनों के सम्बंध में मंत्रियों और महान्यायवादी के अधिकार
89	राज्य सभा का सभापति तथा उपसभापति
90	राज्य सभा के उपसभापति के पद की रिक्ति, त्याग तथा पद से हटाया जाना।
91	सभापति के कर्तव्यों के निर्वहन अथवा सभापति के रूप में कार्य करने की उपसभापति अथवा अन्य व्यक्ति की शक्ति
92	जब राज्य सभा के सभापति अथवा उपसभापति को पद से हटाने का संकल्प विचाराधीन हो तब उसका पीठासीन न होना
93	लोक सभा का अध्यक्ष तथा उपाध्यक्ष
94	लोक सभा अध्यक्ष तथा उपाध्यक्ष पद की रिक्ति, त्यागपत्र तथा पद से हटाया जाना
95	लोक सभा उपाध्यक्ष अथवा किसी अन्य व्यक्ति का लोक सभा अध्यक्ष के कर्तव्यों के निर्वहन की शक्ति
96	जब लोक सभा अध्यक्ष तथा उपाध्यक्ष को पद से हटाने का संकल्प विचाराधीन हो तब उसका पीठासीन न होना।

97	सभापति व उपसभापति तथा अध्यक्ष व उपाध्यक्ष के वेतन-भत्ते
98	संसद का सचिवालय
99	सदस्यों द्वारा शपथ या प्रतिज्ञान
100	दोनों सदनों में मतदान, रिक्तियों के होते हुए भी सदनों की कार्य करने की शक्ति तथा गणपूर्ति
101	स्थानों का रिक्त होना
102	संसद की सदस्यता के लिए निरर्हताएं
103	सदस्यों की अयोग्यता से सम्बंधित प्रश्नों पर निर्णय
104	अनु. 99 के अंतर्गत शपथ लेने या प्रतिज्ञान करने से पहले अर्हत न होते अथवा निरर्हत किए जाने पर भी सदन में बैठने तथा मतदान करने पर दंड।

• लोकसभा (art-81)

- लोकसभा को निम्न सदन / प्रथम सदन / अस्थाई सदन/ लोकप्रिय सदन कहते हैं।
- प्रथम लोकसभा का गठन 17 अप्रैल, 1952 को हुआ था।
- अनुच्छेद 81 तथा 331 लोकसभा के गठन से संबंधित हैं।
- लोकसभा में अधिकतम 552 सदस्य हो सकते हैं। इनमें से 530 सदस्य राज्यों से जबकि केंद्र शासित प्रदेशों से 20 सदस्य चुने जाते हैं जबकि 2 आंग्ल भारतीय सदस्य भारत के राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत किए जाते हैं।
- लोकसभा की वर्तमान सदस्य संख्या 545 से इनमें से 530 सदस्य राज्यों से जबकि 13 सदस्य केंद्र शासित प्रदेशों से चुने जाते हैं जबकि 2 आंग्ल भारतीय सदस्य भारत के राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत किए जाते हैं।
- 91वाँ संविधान संशोधन अधिनियम 2001 में प्रावधान किया गया है कि लोकसभा की अधिकतम सदस्य संख्या 552 सन् 2026 तक बनी रहेगी।
- लोकसभा का कार्यकाल अपनी प्रथम बैठक से अगले 5 वर्ष तक होती है।
- लोकसभा का सदस्य बनने के लिए व्यक्ति में निम्नलिखित योग्यताएं होनी आवश्यक हैं:
 - वह भारत का नागरिक हो।
 - उसकी आयु 25 वर्ष से कम न हो।
 - वह संघ सरकार तथा राज्य सरकार के अधीन किसी लाभ के पद पर न हो (सरकारी नौकरी में न हो)
 - वह पागल / दिवालिया न हो।
- लोकसभा - अध्यक्ष का कार्यकाल पाँच वर्ष होता है, किन्तु अपने पद से वह स्वेच्छा से त्यागपत्र दे सकता है अथवा अविश्वास प्रस्ताव द्वारा उसे हटाया जा सकता है।
- 61वाँ संविधान संशोधन अधिनियम, 1989 के द्वारा यह व्यवस्था कर दी गई कि 18 वर्ष की आयु पूरी करने वाला नागरिक लोकसभा या राज्य विधानसभा के सदस्यों को चुनने के लिए वयस्क माना जाएगा।



- लोकसभा विघटन की स्थिति में 6 मास से अधिक नहीं रह सकती।
- लोकसभा का गठन अपने प्रथम अधिवेशन की तिथि से पाँच वर्ष के लिए होता है।
- लेकिन प्रधानमंत्री की सलाह पर लोकसभा का विघटन राष्ट्रपति द्वारा 5 वर्ष के पहले भी किया जा सकता है।
- क्योंकि लोकसभा के दो बैठकों के बीच का समयान्तराल 6 मास से अधिक नहीं होना चाहिए।
- लोकसभा की अवधि एक बार में 1 वर्ष से अधिक नहीं बढ़ायी जा सकती है।
- आपात उद्घोषणा की समाप्ति के बाद 6 माह के अन्दर लोकसभा का सामान्य चुनाव कराकर उसका गठन आवश्यक है।
- लोकसभा का अधिवेशन 1 वर्ष में कम से कम 2 बार होना चाहिए।
- अनुच्छेद 85 के तहत राष्ट्रपति को समय-समय पर संसद के प्रत्येक सदन, राज्यसभा एवं लोकसभा को आहूत करने, उनका सत्रावसान करने तथा लोकसभा का विघटन करने का अधिकार प्राप्त है।
- लोकसभा अध्यक्ष लोकसभा का प्रमुख पदाधिकारी होता है और लोकसभा की सभी कार्यवाहियों का संचालन करता है -
- लोकसभा अध्यक्ष का निर्वाचन लोकसभा के सदस्यों के द्वारा किया जाता है।
- लोकसभा अध्यक्ष के निर्वाचन की तिथि राष्ट्रपति निश्चित करता है।
- लोकसभा अध्यक्ष लोकसभा के सामान्य सदस्य के रूप में शपथ लेता है।
- लोकसभा अध्यक्ष को कार्यकारी अध्यक्ष शपथ ग्रहण कराता है।
- आगामी लोकसभा चुनाव के गठन के बाद उसके प्रथम अधिवेशन की प्रथम बैठक तक अपने पद पर बना रहता है। लोकसभाध्यक्ष उपाध्यक्ष को अपना त्यागपत्र दे देता है।

राज्यों में लोकसभा सदस्यों की संख्या

क्र.सं.	सदन/राज्य	लोकसभा सीट
1	आंध्र प्रदेश	25
2	अरुणाचल प्रदेश	2
3	असम	14
4	बिहार	40
5	छत्तीसगढ़	11
6	गोवा	2
7	गुजरात	26
8	हरियाणा	10
9	हिमाचल प्रदेश	4
10	जम्मू - कश्मीर (यूटी)	5

11	झारखंड	14
12	कर्नाटक	28
13	केरल	20
14	मध्य प्रदेश	29
15	महाराष्ट्र	48
16	मणिपुर	2
17	मेघालय	2
18	मिजोरम	1
19	नागालैंड	1
20	राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली	7
21	ओडिशा	21
22	पुडुचेरी	1
23	पंजाब	13
24	राजस्थान	25
25	सिक्किम	1
26	तमिलनाडु	39
27	तेलंगाना	17
28	त्रिपुरा	2
29	उत्तर प्रदेश	80
30	उत्तराखंड	5
31	पश्चिम बंगाल	42

केन्द्रशासित प्रदेश लोकसभा सदस्यों की संख्या

1. दिल्ली	7
2. अंडमान निकोबार	1
3. चण्डीगढ़	1
4. दादरा / नागर हवेली	1
5. दमन एवं दीव	1
6. लक्षद्वीप	1
7. पुदुचेरी	1

• राज्यसभा (art-80)

- राज्यसभा को उच्च सदन /द्वितीय सदन /स्थायी सदन/ संघीय सदन भी कहा जाता है।
- राज्यसभा राज्यों का प्रतिनिधित्व करती है।
- यह एक स्थाई सदन है और कभी भंग नहीं होता
- किन्तु इसके 1/3 सदस्य प्रति दो वर्ष के बाद स्थान खाली कर देते हैं, जिनकी पूर्ति नए सदस्यों से होती है।
- भारत का उपराष्ट्रपति राज्यसभा का पदेन सभापति होता है।
- राज्यसभा में अधिक-से-अधिक 250 सदस्य हो सकते हैं। इनमें 238 राज्यों तथा केन्द्रशासित प्रदेशों से निर्वाचित और 12 सदस्य राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत होते हैं। ये 12 सदस्य ऐसे होते हैं जिन्हें साहित्य, विज्ञान, कला सामाजिक सेवा इत्यादि का विशेष ज्ञान होता है।

- अविश्वास प्रस्ताव 19 दिन के नोटिस पर ही प्रस्तुत किया जा सकता है।
- 1963 में पहला अविश्वास प्रस्ताव JB-कृपलानी द्वारा रखा गया था।
- अब तक कोई भी अविश्वास प्रस्ताव लोकसभा द्वारा पारित नहीं किया जा सका।
- विश्वास व अविश्वास प्रस्ताव के मध्य कम से कम 6 माह का अन्तर जरूर होना चाहिए।

निन्दा- प्रस्ताव भी अनुच्छेद 75 (iii) से प्रेरित है, यह विपक्ष द्वारा लोकसभा में रखा जाता है, किसी एक मंत्री के निन्दा प्रस्ताव पारित होने पर सम्पूर्ण मंत्री परिषद् को त्यागपत्र देना पड़ता है।

ध्यान- आकर्षण प्रस्ताव लोकसभा में प्रस्तुत किया जाता है, इसके तहत किसी विशेष मुद्दे पर सदन का ध्यान आकर्षित किया जाता है।

कामरोको प्रस्ताव प्रस्ताव के मध्य चल रही कार्यवाही को रोककर किसी अन्य महत्वपूर्ण मुद्दे पर चर्चा की जाती है, यह दोनों सदनों में लाया जा सकता है।

- **कटौती प्रस्ताव** को समापन प्रस्ताव के नाम से भी जाना जाता है।
- विशेषाधिकार हनन का प्रस्ताव दोनों सदनों में लाया जा सकता है।
- संसद में दो प्रकार की समितियाँ अस्तित्व में होती हैं।
 1. तदर्थ समिति
 2. स्थायी समिति
- स्थायी समितियाँ वर्ष भर अस्तित्व में रहती हैं। जिनमें दो समितियाँ सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं।
- लोक लेखा समिति
- अनुमान समिति

लोक लेखा समिति

इसमें कुल 22 सदस्य होते हैं जिसमें 15 लोकसभा से, 7 राज्यसभा से लिए जाते हैं।

- इसका कार्यकाल 1 वर्ष का होता है (30 अप्रैल से 31 मई)
- इस समिति का मुख्य कार्य C.A.G. 'रिपोर्ट के आधार पर सार्वजनिक लेखकों की जाँच करना होता है। समिति का कोरम 1/3 सदस्यों से पूरा होता है।
- (अनुमान समिति | आकलन / प्राकलन समिति)
- यह लोकसभा की समिति है।
- इसमें कुल 30 सदस्य होते हैं।
- इस समिति का कार्य बचते के उपाय सुझाना है।
- इसका अध्यक्ष सत्तादल का वरिष्ठ नेता होता है।
- समिति का कार्यकाल 1 मई से 30 अप्रैल (1 साल) का होता है।
- कोरम 1/3 सदस्यों से पूरा होता है।
- इसे अधिकारियों की मित्र- समिति भी कहते हैं।

सार्वजनिक उपक्रम समिति

- "इसमें सदस्यों की कुल संख्या 15 होती है। 10 लोकसभा व 5 राज्यसभा से।
- यह समिति व सार्वजनिक उपक्रमों के प्रबंधन में सुधार के सुझाव देती है।

कार्य मन्त्रणा समिति

- संसद के दोनों सदनों की अपनी - अपनी कार्य-मंत्रणा समितियाँ होती हैं। जिनका अध्यक्ष स्पीकर / चेयरमैन होता है।
- इस समिति में 10- सदस्य होते हैं, प्रमुख दलों के संसदीय दल के नेता होते हैं, इस समिति का मुख्य दायित्व सदन की कार्य-सूची का निर्धारण करना होता है।

Lame Duck -यह अमेरिकी (U.S.A) अवधारणा है, इस अवधारणा के तहत संसद की बैठक में कोई महत्वपूर्ण निर्णय नहीं लिया जा सकता है। अमेरिका में कार्यकाल समाप्त होने के पहले ही संसदीय चुनाव करा लिया जाता है। जबकि जिन सदस्यों का कार्यकाल शेष है, उनकी आखरी बैठक इसके बाद होती है। इस बैठक में कामचलाऊ मुद्दों पर भी चर्चा की जाती है। यही Lame Duck Session है।

- बजट - वार्षिक वित्तीय विवरण, अनुच्छेद-112 से सम्बन्धित है।
- संचित निधि केन्द्र एवं राज्य दोनों सरकारों द्वारा गठित की जाती है।
- सरकार को प्राप्त समस्त आय (राजस्व, उधार) इस निधि का हिस्सा होती है।
- संसद (विधायिका) के अनुमति के बगैर इस निधि से धन व्यय नहीं किया जा सकता।
- आकस्मिक निधि का गठन (अनुच्छेद -267) के तहत किया जाता है।
- इस निधि का प्रयोग आपदा राहत के लिए किया जाता है।
- यह निधि राष्ट्रपति/राज्यपाल के नाम से रखी जाती है।
- व्यय के बाद विधायिका की अनुमति प्राप्त कर ली जाती है।
- अनुदान मांगों पर बहस व मतदान के लिए 26 दिन का समय निर्धारित किया जाता है।
- विपक्ष अनुदान मांगों के विरुद्ध कटौती- प्रस्ताव ला सकता है।

यह कटौती प्रस्ताव तीन प्रकार के होते हैं।

- (1) सांकेतिक कटौती प्रस्ताव
- (2) नीतिगत कटौती प्रस्ताव
- (3) मितव्ययिता कटौती प्रस्ताव

1. सांकेतिक कटौती प्रस्ताव - इसके तहत किसी अनुदान-मांग से 100 रु. घटाने का प्रस्ताव रखा जाता है।
2. नीतिगत कटौती प्रस्ताव - इसके तहत किसी अनुदान मांग को घटाकर 1 रु. करने का प्रस्ताव रखा जाता है।

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें -

(Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - <https://shorturl.at/qBJ18> (74 प्रश्न, 150 में से)

RAS Pre 2023 - <https://shorturl.at/tGHRT> (96 प्रश्न, 150 में से)

UP Police Constable 2024 - <http://surl.li/rbfyn> (98 प्रश्न, 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - <https://youtu.be/gPqDNlc6UR0>

Rajasthan CET 12th Level - <https://youtu.be/oCa-CoTFu4A>

RPSC EO / RO - <https://youtu.be/b9PKjl4nSxE>

VDO PRE. - <https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856Wl8&t=202s>

Patwari - <https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s>

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - <https://youtu.be/2gz2fJyt6vI>

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
MPPSC Prelims 2023	17 दिसम्बर	63 प्रश्न (100 में से)
RAS PRE. 2021	27 अक्टूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये

whatsapp - <https://wa.link/r46kn5> 1 web.- <https://shorturl.at/gilw7>

RAS Pre. 2023	01 अक्टूबर 2023	96 प्रश्न (150 में से)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (2 nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्टूबर (2 nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसम्बर (1 st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसम्बर (2 nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसम्बर (2 nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1 st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21 नवम्बर 2021 (1 st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1 st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1 st शिफ्ट)	98 (150 में से)
UP Police Constable	17 February 2024 (1 st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

whatsapp - <https://wa.link/r46kn5> 2 web.- <https://shorturl.at/gilw7>